वसंत आता नहीं, ले आया जाता है...

...हजारी प्रसाद द्विवेदी

स्कूल में फिर एक हत्या

बच्चों के हिंसक होते जाने के तो तमाम इंतजाम हैं, यहां तक कि घर में उन्हें हथियार भी मिल जा रहे हैं, लेकिन उन्हें समझने या सही रास्ते पर ले आने के लिए किसी के पास समय नहीं है।

हरियाणा में यमुनानगर के एक स्कूल में प्रिंसिपल की डांट-फटकार से क्षुब्ध बारहवीं के एक छात्र ने गोली मारकर उनकी जिस तरह हत्या कर दी, वह स्कूल परिसर के हिंसा का केंद्र बन जाने का एक और सनसनीखेज उदाहरण है। विगत सितंबर में इसी हरियाणा में गुरुग्राम के रेयान इंटरनेशनल स्कूल के ग्यारहवीं के एक छात्र द्वारा परीक्षा और पैरेंट्स-टीचर मीटिंग टालने की मंशा से एक छात्र की हत्या कर देने की घटना ने पूरे देश में खलबली मचा दी थी। यमुनानगर की इस हैरतनाक घटना का स्तब्ध करने वाला पक्ष यह भी है कि छात्र ने घर से अपने पिता की लाइसेंसी रिवॉल्वर चुराकर अगले दिन इस हत्याकांड को अंजाम दिया। इसी महीने बालिग हुआ वह लड़का अपने गुस्सैल स्वभाव के लिए कुख्यात था। स्कूल का काम न करने के अलावा मोबाइल और बाइक लाने की वजह से भी उसे डांट पड़ती थी। लेकिन बेटे के साथ ही गिरफ्तार पिता का बयान बेहद चौंकाने वाला है कि उन्हें अपने बेटे के पढ़ाई में कमजोर होने के बारे में कुछ पता ही नहीं था। इससे पता चलता है कि परिवार में एक दूसरे को जानने-समझने और संवाद करने की जगह भी कितनी कम होती जा रही है। बच्चों के हिंसक होते जाने के तो तमाम इंतजाम हैं, यहां तक कि घर में उन्हें हथियार भी मिल जा रहे हैं, लेकिन इन्हें समझने या सही रास्ते पर लाने के लिए किसी के पास समय नहीं है। ऐसा क्यों है कि जिस दौर में शिक्षकों और अभिभावकों के बीच संवाद की एक व्यवस्था है, उस दौर में अनेक अभिभावकों को अपने बच्चों की पढ़ाई के बारे में जानकारी नहीं होती? ग्रेटर नोएडा में डांट-फटकार से नाराज एक लड़के का अपनी मां और बहन की हत्या कर डालना और इसी महीने लखनऊ के एक स्कूल में छठी की एक छात्रा द्वारा पहली के एक छात्र को चाकू मारकर घायल कर देना बताता है कि छोटे बच्चों तक में हिंसा जिस तरह घर कर रही है, परिवार और समाज के स्तर पर उससे निपटने के धैर्यपूर्ण और संजीदा प्रयास होने चाहिए। अलबत्ता स्कूल परिसरों में बढ़ती हिंसा को देखते हुए सुरक्षा व्यवस्था की भी अब उतनी ही जरूरत है। शिक्षा के जो मंदिर आज विद्या की देवी की आराधना कर रहे हैं, उनका हिंसा का केंद्र बनते जाना बेहद खतरनाक संकेत है।

बज उठे मन-वीणा के राग

वसंत ऋतु में मनुष्य ही नहीं, जड़ और चेतन प्रकृति भी श्रृंगार करती हैं। प्रकृति का हर परिवर्तन मनुष्य के जीवन में परिवर्तन अवश्य लाता है। वसंत वास्तव में आंतरिक उल्लास का पर्व है।

आदित्य कुमार शुक्ल

गुनगुनी धूप के साथ प्रकृति का कण-कण झंकृत है, जैसे वीणा की धुन पर थिरक रही प्रकृति सुंदरी पीतवर्ण की चुनरी ओढ़े रंग-बिरंगी तितलियों के साथ दौड़ रही है और मानवीय चेतना में एक नई ताजगी का संचार कर रही है। कड़कड़ाती ठंड खुद को समेट रही है और लौट रही है वहां, जहां से वह आई थी। आम के पेड़ों पर मंजरियों से उठती सुगंध और कोयल की कूक मन को तरंगित कर रही है। हर ओर मानो खुशियों का स्व संचार हो रहा है। पक्षियों की कलरव, पीली-पीली सरसों, पेड़ों का श्रृंगार करने उभरी हुई नई कोपलें, सब-कुछ मन को उल्लासित कर रहा है। आज का वसंत कुछ ऐसा ही है, जो मानवीय मनों पर अनुदान और वरदान की बारिश कर रहा है।

आशा की नई किरणें विश्वास के नव सूर्य के साथ मन को नव उमंग देने को आतुर है। जो हम सबको रंगना चाहती पीताभ रंग में, जो प्रतीक है प्रेम का, उमंग का, उत्साह का, उल्लास का। यह ज्यों-ज्यों गढ़ा होता जाएगा, इससे उठाने लगेगी बलिदान और विजय की खुशबू। यह वसंत ही तो है, जो देता है संदेश निरंतरता के साथ हर पल विजयगान करने का, परिवर्तन को स्वीकार करने का और आगे बढ़ाने का, तब तक, जब तक तुम्हें तुम्हारा उच्चतर लक्ष्य प्राप्त न हो जाए। यह एक ऐसा राग है, जिसकी सिद्धि गर हो जाए, तो जीवन आनंद से भर उठता है। वसंत एक ऐसा राग है, जिसे दिन-रात, सप्ताह, महीने, साल किसी भी पहर में गाया-बजाया जा सकता है।

वसंत ईश्वर की सर्वव्यापकता का प्रतीक है। भगवान कृष्ण *गीता* में कहते हैं कि *वसंत ऋतुनाम कुसुमाकररू* अर्थात ऋतुओं में मैं कुसुमाकर अर्थात वसंत के रूप में हूं। वसंत को काम अर्थात सौंदर्य का पुत्र कहा जाता है, जो एक से एक मनोरम दृश्य रचता है। चाहे वह पतझड़ के बाद जीवन का संचार हो, हर ओर नव पुष्पों के सहारे खुशियों का संचार हो या फिर संचार हो ऊर्जा का। सब कुछ वसंत में संभव है। हेमंत के ठिठुरन से निकलकर प्रकृति की सुंदरता सर्वत्र मनोहारी चित्रावली प्रस्तुत कर रही है। इन सबके इतर वसंत ज्ञान की देवी मां सरस्वती की आराधना का दिवस भी है। यह माना जाता है कि मानव की उत्पत्ति से पहले सब मौन था, तब सृष्टा ने वाक का आविर्भाव किया और जिस दिन यह सब घटित हुआ वह दिन था वसंत पंचमी का, जिसके सहारे प्रकृति के सभी जीवों को मधुर वाणी मिली। मां सरस्वती इस वाणी की देवी हैं।

प्रकट्येनसरस्वत्यावसंत पंचमी तिथौ। विद्या जयंती सा तेन लोके सर्वत्र कथ्यते॥ मां सरस्वती के सहारे वाक का प्रकाट्य हुआ, इसलिए वह सृजन की निरंतरता की प्रेरणा देती हैं। मां चतुर्भुज रूप में वीणा से आनंद, पुस्तक से ज्ञान और माला के सहारे वैराग्य का संचार करती हैं। माता सरस्वती का वाहन हंस हमें सिखाता है कि हम विवेकवान बनें।

मां सरस्वती एकात्मता का संदेश भी देती हैं, ऐसी मान्यता है कि सरस्वती तीन देवियों लक्ष्मी, शक्ति और सरस्वती का सम्मिलित स्वरूप हैं। अगर हम सरस्वती अर्थात विद्या के वाहक बनना चाहते हैं, तो हमें अपने आचरण, अपने व्यवहार में हंस जैसी सुंदरता लानी होगी। इस दिन उनकी पूर्ण मनोभाव से पूजा-अर्चना करनी चाहिए। हमें स्वयं और दूसरों के विकास की प्रेरणा लेनी चाहिए। इस दिन हम अपने भविष्य की रणनीति माता सरस्वती के श्री चरणों में बैठकर निर्धारित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त अपने दोष, दुर्गुणों का परित्याग कर अच्छे मार्ग का अनुगमन कर सकते हैं, जिस मार्ग पर चलकर हमें शांति और सुकून प्राप्त हो। मां सरस्वती हमें प्रेरणा देती हैं, श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की। इस दिन हम पीले

वस्त्र धारण करते हैं, पीले अन्न खाते हैं, हल्दी से पूजन करते हैं। पीला रंग प्रतीक है समृद्धि का। इस कारण वसंत पंचमी हम सबको समृद्धि के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है।

सनातन धर्म की यह विशेषता है कि यहां लगभग हर रोज कोई न कोई त्योहार होता है। शायद इसीलिए इसको संसार में उच्च स्थान प्राप्त है। वसंत पंचमी का पर्व भी इसी क्रम मे आता है। वास्तव में यह मानसिक उल्लास और आंतरिक आह्लाद के भावों को व्यक्त करने वाला पर्व है। यह पर्व सौंदर्य विकास और मन की उमंगों में वृद्धि करने वाला माना जाता है। वसंत ऋतु में मनुष्य ही नहीं, जड़ और चेतन प्रकृति भी श्रृंगार करती हैं। प्रकृति का हर परिवर्तन मनुष्य के जीवन में परिवर्तन अवश्य लाता है। इन परिवर्तनों को यदि समझ लिया जाए, तो जीवन का पथ सहज और सुगम हो जाता है।

वसंत के मर्म को समझें। वसंत वास्तव में आंतरिक उल्लास का पर्व है। वसंत से सीख लें और मन की जकड़न को दूर करते हुए, सुखी जीवन का आरंभ आज और अभी से करें, जिससे इस वसंत में मन-वीणा का राग बज उठे।

कुछ भी...

देश करणी सेना चलाएगी या संविधान?

इस दौर में हमारी सांविधानिक संस्थाओं की बेबसी पर मुझे गुस्सा बहुत आने लगा है। कई लोग मुझे समझाते हैं कि फिल्म बनानी है, तो यह गुस्सा नुकसानदेह है। लेकिन मेरे लिए यह गुस्सा इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि इसके बिना अगर मैं फिल्म बना भी लूं, तो उसका कोई अर्थ नहीं रह जाएगा। सबसे पहले तो मुझे सेंसर बोर्ड पर गुस्सा आया कि उसने करणी सेना के दबाव में राजस्थान के कथित इतिहासकारों और राजवंशियों को फिल्म दिखा कर 'पद्मावत' की रिलीज को हरी झंडी दी। इसके बाद भी करणी सेना की धमकियां बंद नहीं हुईं और राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश और गुजरात की राज्य सरकार 'पद्मावत' की रिलीज को अपने यहां बैन करके करणी सेना के विरोध की आग में घी डालने का काम किया। निर्माताओं ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया और सुप्रीम कोर्ट ने इस प्रतिबंध को असांविधानिक मानते हुए उसे रद्द कर दिया। अब तक सुप्रीम कोर्ट तमाम तरह की साजिशों पर आखिरी कील साबित होती रही है, लेकिन पता नहीं करणी सेना को किसकी शह मिली हुई है कि वह सुप्रीम कोर्ट के फैसलों से भी बगावत करने पर उतर आई है। हैरानी इस बात की है कि कश्मीर में सेना पर पत्थरबाजी की तरह करणी सेना से जुड़े तमाम हादसे राष्ट्रीय मुद्दा बन गए हैं, तब भी हमारे प्रधानमंत्री की बेमिसाल खामोशी कायम है।

-अविनाश दास, बीबीसी से

आउम शांति

असमंजस

महाराज सगर ने पुत्र की प्राप्ति के लिए परमसमाधि के द्वारा भगवान की आराधना की थी। इससे प्रसन्न होकर महर्षि और्व ने उन्हें दो प्रकार के पुत्र होने का वरदान दिया। उन्होंने महाराज की दोनों पत्नियों को यह वरदान दिया कि वह दोनों प्रकार के पुत्रों में से किसी को अपनी इच्छा के अनुसार चुन लें। पहले वरदान में हजार पुत्रों की प्राप्ति होनी थी। दूसरे वरदान में एक ही पुत्र की प्राप्ति थी, किंतु इसी को वंशधर होना था। महारानी सुमित ने हजार पुत्र वाला वरदान मांगा। महाराज की दूसरी पत्नी केशिनी ने दूसरे वरदान को चुना था। केशिनी से असमंजस हुए, जिनका पुत्र अंशुमान हुआ, जिसने सगर की वंश-परंपरा को आगे बढ़ाया। असमंजस पिछले जन्म में योग साधना कर रहे थे। उन्हें पूर्वजन्म में ऊंची स्थिति प्राप्त हो गई थी। सारी सिद्धियाँ उनके वश में थीं। किंतु कुछ क्षण के कुसंग ने उन्हें पथ से च्युत कर दिया था। फलतः भगवान न मिले और उन्हें दूसरा जन्म लेना पड़ा। यह बात असमंजस को बचपन से याद थी। अतः वह प्रारंभ से ही ममता से दूर रहते थे, वह इस प्रयास में रहते थे कि इस जन्म में किसी तरह की आसक्ति न हो जाए। परिणाम यह हुआ कि सारी प्रजा और सारा परिवार असमंजस से अप्रसन्न हो गया। पिता को भी पुत्र-स्नेह की तिलांजलि देनी पड़ी। सबने मिलकर उन्हें घर से निकाल बाहर कर दिया। राजकुमार असमंजस यही चाहते थे। वह प्रसन्नता से धुनी रमाने चल दिए। योगी किसी की हत्या नहीं करता। असमंजस ने वन जाने के पहले सभी बच्चों को जीवित कर अपने पिता के चरणों में डाल दिया।

वसंत पंचमी ऐसा पर्व है, जिसमें समस्त प्राणियों के भीतर उल्लास, उमंग और नई ऊर्जा का संचार स्वतः होने लगता है।

नव-सृजन का पर्व वसंत पंचमी

प्रमोद कुमार अग्रवाल, ज्योतिषविद

पतझड़ के बाद वृक्षों में नई कोपल, खेतों में स्वर्णिम आभा लिए लहलाती सरसों, वातावरण में भीनी-भीनी सुगंध, बाग-बगीचों में खिलते रंग-बिरंगे पुष्पों पर मंडराते भंवरे और पक्षियों का मधुर कलरव। यह सब ऋतुओं की रानी वसंत के आगमन के संकेत है।

शीत ऋतु के बाद वसंत का जब सुहावना मौसम दस्तक देता है, तो ऐसा प्रतीत होता है, मानो प्रकृति ने नया श्रृंगार कर लिया हो। वसंतोत्सव के रूप में जाना जाने वाला वसंत एक ऐसा पर्व है, जिसमें समस्त प्राणियों के भीतर उल्लास, उमंग का संचार स्वतः ही होने लगता है।

प्रकृति में नई ऊर्जा का संचार

नव सृजन और प्राकृतिक सुंदरता का पर्याय वसंत पंचमी अपने व्यक्तित्व को संवारने, मानसिक विकारों का परित्याग करने, प्रसन्नता, त्याग और साहस के साथ अपने अस्तित्व को बनाए रखने एवं अपनी प्रकृति के मौलिक स्वरूप को बनाए रखकर समस्त प्राणियों का कल्याण करने का संदेश देती है।

देवी सरस्वती का दिन

माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि, वसंत पंचमी के रूप में सर्वज्ञात है। इस दिन ज्ञान, वाणी एवं ललित कलाओं की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती की पूजा-आराधना की जाती है। प्रातःकाल नित्य क्रियाओं से निवृत्त होने के बाद पूरे शरीर में तेल का उबटन लगाकर स्नान के बाद बसंती रंग के वस्त्र धारण करते हैं और भगवान विष्णु, शिव, गणेश और सरस्वती की पूजा करते हैं। इसके साथ-साथ भगवान श्री कृष्ण, कामदेव और रति की पूजा भी की जाती है। माना जाता है कि ऐसा करने से जीवन में पारिवारिक प्रेम, स्नेह, प्रसन्नता आदि में वृद्धि होती है। सरस्वती पूजन में पीला चंदन, पीले वस्त्र, पीले पुष्प, बेसन से बने मिष्ठान, केसर एवं हल्दी मिले हुए मीठे चावल का भोग लगाया जाता है।

होली का शुभारंभ

बृज क्षेत्र में वसंत पंचमी के दिन से होली का शुभारंभ हो जाता है। चौराहों पर होलिका दहन के लिए लकड़ी एकत्र करने के बाद गुलाल उड़ाया जाता है। जो फाल्गुन मास की पूर्णिमा तक निरंतर उल्लास के साथ चलता है।

अक्षर ज्ञान कराने का पावन दिन

वसंत पंचमी की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती का दिन होने से वसंत पंचमी के दिन छोटे बच्चों को अक्षर ज्ञान कराया जाता है। स्कूलों में सरस्वती पूजन किया जाता है तथा ज्ञान वृद्धि के लिए सरस्वती जी से कामना की जाती है। वहीं गुरुद्वारों में इस दिन राग वसंत में गुरुवाणी के कीर्तन द्वारा श्रद्धालुओं में आध्यात्मिक भावना जागृत की जाती है। वसंत पर्व ऐसा पर्व है, जो समस्त सृष्टि को नई ऊर्जा व सौंदर्य से लबरेज कर देता है। यह प्रकृति से प्रेम का पर्व है।

नकली कार असली चालान

कनाडा में एक आदमी को तेज बर्फबारी के बीच एक शरारत सूझी। उसने बीच सड़क पर बर्फ से एक कार बना दी। गलत जगह खड़ी कार की शिकायत पर

पहुंची पुलिस ने कार का चालान भी कर दिया। देखने में ऐसा लग रहा था मानों कार के ऊपर बर्फ जम गई हो। लेप्रिस नाम के कारपेंटर ने यह कार बनाई थी। उन्होंने अपनी इस कार की हकीकत को जब इंटरनेट पर डाला, तो लोग उनकी कलाकारी के कायल हो गए। लेप्रिस कहते हैं कि यह बस एक शरारत भर थी, लेकिन इस कार का पुलिस चालान भी कर देगी यह हास्यापद है।

पानी के अंदर सुरंग

मेक्सिको में गोताखोरों के एक ग्रुप को दुनिया की सबसे लंबी अंडर वॉटर सुंरग मिली है। इस सुरंग को प्राचीन माया सभ्यता का माना जा रहा है। सुरंग की

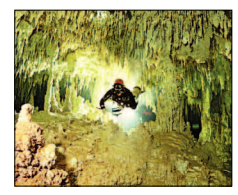

लंबाई 347 किलोमीटर है। इस सुरंग को 'सैक एकटन' नाम दिया गया है। माना जा रहा है कि सुरंग बारह हजार साल पुरानी है। इस सुरंग के बीच एक कब्र भी मिली है। गोताखोरों की टीम ने इंस्टाग्राम पर फोटो शेयर करते हुए लिखा है कि हमें गर्व महसूस हो रहा है कि हमारी टीम ने इस सुरंग को खोज निकाला। आर्कोलॉजिस्ट, गुईलेर्मो एंडा का कहना है क ये वाकई शानदार रहा। इस पर रिसर्च जारी है।

ENGLISH vinglish

Word-Meaning (शब्द-अर्थ)

- **Investigator**
  उच्चारण- इनवेस्टिगेटर, अर्थ-खोजी
  समानार्थी शब्द- tracer-ट्रेसर
- **Recreation**
  उच्चारण-रीक्रिएशन, अर्थ - प्रसन्नता
  समानार्थी शब्द-joy- जॉय
- **Port**
  उच्चारण- पोर्ट, अर्थ - दर्शाना
  समानार्थी शब्द-show- शो
- **Devastate**
  उच्चारण- डेवस्टेट, अर्थ - जुल्म करना
  समानार्थी शब्द- oppress- ऑप्रेस

साइबर जोन

रेलवे की संपत्ति आपकी संपत्ति है इस संपत्ति में बगैर टिकट प्रवेश करने पर व्यक्ति को आतिथ्य स्वागत के लिए कारावास भ्रमण भी करवाया जाता है।

- सुभाष

कुल मिलाकर बीजेपी और कांग्रेस ये साबित करने में लगी हैं कि आम आदमी पार्टी वही है जो कि हम बहुत पहले से हैं।

@ कौशल

पहले कबूतर प्रेमियों के संदेश पहुंचाने का काम किया करते थे फिर मोबाइल का जमाना आ गया और इसके बाद कबूतरों की रोजी-रोटी छिन गईं।

@ प्रेम

पिछले जन्म में सूरज निकलने से पहले मुर्गे बन कर बांग देने वाले लोग इस जन्म में सुबह-सुबह सोशल मीडिया पर गुड मॉर्निंग और सुप्रभात का मैसेज भेजते हैं। **@ रुचि**

भविष्यफल

मेष मूल्यवान वस्तु गुम हो सकती है। व्यवसाय में सामान्य धन लाभ होगा।

वृषभ अटके कार्य में सफलता मिलेगी। समाज में सम्मान बढ़ेगा। घर में आनंद रहेगा।

मिथुन नौकरी में बुद्धि-कौशल का लाभ मिलेगा। सरकारी क्षेत्र से अर्थ प्राप्ति संभव है।

कर्क सरकारी परेशानी से मुक्ति मिलेगी। नौकरी में सम्मान बढ़ेगा। धर्म में रुचि रहेगी।

सिंह अजनबी से सचेत रहें। आर्थिक परेशानी का हल मिलेगा। व्यवसाय में सावधानी बरतें।

कन्या करियर में उन्नति के अवसर मिलेंगे। आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी।

तुला भू-संपत्ति में वृद्धि संभव है। परीक्षा-साक्षात्कार में सफलता मिलेगी। आकस्मिक लाभ होगा।

वृश्चिक शिक्षा में रुचि रहेगी। कार्यस्थल में सहयोगियों से निराशा होगी। लाभ से मन प्रसन्न रहेगा।

धनु प्रतिकूल समाचार मिल सकता है। कार्यक्षेत्र में श्रम की अधिकता रहेगी।

मकर नौकरी में मान-सम्मान बढ़ेगा। विकास की नई योजना बन सकती है।

कुंभ अनुकूल समाचार मिलेगा। नौकरी में कार्यभार बढ़ सकता है। वाद-विवाद से बचें।

मीन उपहार-सम्मान का लाभ मिलेगा। नौकरी में पदभार बढ़ सकता है। साख में वृद्धि होगी।

कल का पंचांग

विक्रमी संवत 2074, 03 माघ मास शाके 1939, माघ मास 10 प्रविष्टे, 05 जमादिउलअवल हिजरी 1439, माघ शुल्क पक्ष षष्ठी 16.40 तक उपरांत सप्तमी, उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र 08.07 तक उपरांत रेवती नक्षत्र, शिव योग 09.58 तक उपरांत सिद्ध योग, तैतिल करण 16.40 तक उपरांत गर करण, चंद्रमा मीन राशि में दिन रात।

सूर्योदयः 07.17 **सूर्यास्त** 17.48

मल्लिका सहरावत-सिंह राशि

मन अशांत रहेगा।

इस राशि के जातक अजनबी से सचेत रहें। आर्थिक परेशानी का हल मिलेगा। मन अशांत रहेगा। व्यवसाय में सावधानी बरतें। हानि होगी।